Dr. Keerti Kumar
Asstt Prof (Guest)
Deptt of Psychology, S.R.A.P. College, Barachatti
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Class- B.A Part I Subsidiary (Psych)
Subject- Psycholog (Subsidiary)
Topic- रंग संवेदना के गुण - दोष
Day- Friday
Date- 18/02/2022
Period- 2nd
Contact no - 9801466117

रंग-संवेदना के गुण :-

यह सिद्धान्त रंग संवेदना की व्याख्या करने में केन्द्रीय संरचना के महत्व पर बल देता है। इस सिद्धान्त के अनुसार रंगों की संवेदना केन्द्रीय क्रियाओं से होती है। इस दृष्टिकोण से यह सिद्धान्त दूसरे सिद्धान्त से अच्छा है।

2. यह सिद्धान्त रंग मिश्रण की व्याख्या करने में बहुत सफल है। (Reiter) रेवर ने भी कहा है कि रंग मिश्रण की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त दूसरे सिद्धान्तों से अधिक कुशल तथा सक्षम है। इस सिद्धान्त के आलोक में रंग मिश्रण के नियमों की व्याख्या सफलता पूर्वक की जा सकती है।

3. जेली तथा जिंगलर ने कहा है कि किसी सिद्धान्त का महत्व इस बात से भी जाहिर होता है कि उसका कोष मूल्य कितना है। इस दृष्टिकोण से भी यंग-हेल्मोर सिद्धान्त का महत्व प्रमाणित होता है। रंग संवेदना के क्षेत्र में इस सिद्धान्त ने शोध कार्य को प्रोत्साहित किया, जिससे हेरिंग आदी ने नये-नये सिद्धान्तों को विकसित किया।

4. हेश्ट (Hecht) ने इस सिद्धान्त के गुणों की चर्चा करते हुए कहा है कि रंग संवेदना का यह एक कुशल सिद्धान्त है।

5. मौर्गन, आदि ने कहा है कि इस सिद्धान्त को रंग संवेदना के क्षेत्र में प्राथमिक होने का श्रेय दिया गया है। रंग संवेदना की व्याख्या के लिए यह प्रथम विधिवत प्रयास होता है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि यह हेलमोहोल्ट सिद्धान्त के उपयुक्त कई गुण हैं। फिर भी इसके कुछ कठिनाइयों के कारण संतोषजनक नहीं माना जा सकता है। अतः कुछ दोष भी पाये जाते हैं।

दोष :—

1. इस सिद्धान्त का सबसे पहला और महत्वपूर्ण दोष यह है कि इसमें केवल, लाल, हरा और नीला रंग को प्राथमिक रंग माना गया है। पीला को द्वितीयक रंग माना गया है परन्तु, हेलमोहोल्ट का यह विचार सही नहीं लगता है।

2. रंग अन्धापन के सम्बन्ध में भी यह सिद्धान्त असफल है। इस सिद्धान्त के आधार पर रंग-अन्धापन की समस्या का समाधान पूर्ण रूप से संभव नहीं है। नीला तथा पीला अन्धापन क्यों साथ-साथ पाया जाता है। लाल हरा अन्धापन अधिक क्यों देखा जाता है इन प्रश्नों का उत्तर इस सिद्धान्त के आधार पर देना कठिन है। हिलगार्ड ने भी कहा है कि रंग-अन्धापन की व्याख्या इससे संभव नहीं है।

3. इस सिद्धान्त का एक दोष यह भी है कि इसके द्वारा उजले के अनुभव की व्याख्या भी ठीक नहीं है। इस सिद्धान्त के अनुसार केवल तीन प्रकार की सूचियाँ हैं और जब ये तीनों सूचियाँ समान मात्रा में क्रियाशील हैं तो उजले का अनुभव होता है। इस सिद्धान्त का यह भी कहना है कि जब तीनों प्रकार की सूचियाँ अथवा अरासायनिक पदार्थों का अभाव होता है तो व्यक्ति पूर्णरूप से रंग अन्धा बन जाता है।

4. इस सिद्धान्त का एक दोष यह है कि समकालिन रंग विरोध की व्याख्या करने में भी यह सफल नहीं है। इस सिद्धान्त के अनुसार इस विरोध का कारण व्यक्ति के पूर्व अनुभव का प्रभाव है।